SANGAM International Journal of Multidisciplinary Research

Vol. 01, Issue 01, September (2023 **)**

E-ISSN: 2584-086X

"हिन्दू धर्म नहीं व्यवस्था और परम्परा है"

डॉ.अवधेश कुमार जौहरी

असी.प्रोफ़.(हिंदी), संगम विश्वविद्यालयभीलवाड़ा ,राजस्थान

मोब.न.- 70147-66690 avadhesh.jauhari@sangamuniversity.ac.in

"गोषु भक्तिर्भवेद्यस्य प्रणवे च दृढ़ा मतिः ।
पुनर्जन्मनि विश्वासः स वै हिन्दुरिति स्मृतः"।।[1]

अर्थात-- गोमाता में जिसकी भक्ति हो , प्रणव जिसका पूज्य मन्त्र हो, पुनर्जन्म में जिसका विश्वास हो-- वही हिन्दू है ।

सनातन धर्म पृथ्वी के सबसे प्राचीन धर्मों में से एक है; हालाँकि इसके इतिहास के बारे में अनेक विद्वानों के अनेक मत हैं । आधुनिक इतिहासकार हड़प्पा , मेहरगढ़ आदि पुरातात्विक अन्वेषणों के आधार पर इस धर्म का इतिहास कुछ हज़ार वर्ष पुराना मानते हैं । जहाँ भारत (और आधुनिक पाकिस्तानी क्षेत्र) की सिन्धु घाटी सभ्यता में हिन्दू धर्म के कई चिह्न मिलते हैं । इनमें एक अज्ञात मातृदेवी की मूर्तियाँ , भगवान शिव पशुपति जैसे देवता की मुद्राएँ , शिवलिंग, पीपल की पूजा , इत्यादि प्रमुख हैं । इतिहासकारों के एक दृष्टिकोण के अनुसार इस सभ्यता के अन्त के दौरान मध्य एशिया से एक अन्य जाति का आगमन हुआ , जो स्वयं को आर्य कहते थे और संस्कृत ना म की एक हिन्द यूरोपीय भाषा बोलते थे । भारतवर्ष को प्राचीन ऋषियों ने "हिन्दुस्थान" नाम दिया था, जिसका अपभ्रंश "हिन्दुस्तान" है ।

"बृहस्पति आगम" के अनुसार:

"हिमालयात् समारभ्य यावत् इन्दु सरोवरम्।
तं देवनिर्मितं देशं हिन्दुस्थानं प्रचक्षते" ॥[2]

अर्थात् हिमालय से प्रारम्भ होकर इन्दु सरोवर (हिन्द महासागर) तक यह देव निर्मित देश हिन्दुस्थान कहलाता है । "हिन्दू" शब्द "सिन्धु" से बना माना जाता है । संस्कृत में सिन्धु शब्द के दो मुख्य अर्थ हैं - पहला, सिन्धु नदी जो मानसरोवर के पास से निकल कर लद्दाख़ और पाकिस्तान से बहती हुई समुद्र में मिलती है, दूसरा - कोई समुद्र या जलराशि। ऋग्वेद की नदीस्तुति के अनुसार वे सात नदियाँ थीं : "सिन्धु, सरस्वती, वितस्ता (झेलम), शुतुद्रि (सतलुज), विपाशा (व्यास), परुषिणी (रावी) और अस्किनी (चेनाब)। एक अन्य विचार के अनुसार हिमालय के प्र थम अक्षर "हि" एवं इन्दु का अन्तिम अक्षर "न्दु", इन दोनों अक्षरों को मिलाकर शब्द बना "हिन्दु" और यह भू-भाग हिन्दुस्थान कहलाया" ।[3]

हिन्दू शब्द उस समय धर्म के बजाय राष्ट्रीयता के रूप में प्रयुक्त होता था । चूँकि उस समय भारत में केवल वैदिक ध र्म को ही मानने वाले लोग थे , बल्कि तब तक अन्य किसी धर्म का उदय नहीं हुआ था इसलिए "हिन्दू" शब्द सभी भारतीयों के लिए प्रयुक्त होता था । भारत में केवल वैदिक धर्मावलम्बियों (हिन्दुओं) के बसने के कारण कालान्तर में विदेशियों ने इस शब्द को धर्म के सन्दर्भ में प्र योग करना शुरु कर दिया ।

आम तौर पर हिन्दू शब्द को अनेक विश्लेषकों ने विदेशियों द्वारा दिया गया शब्द माना है । इस धारणा के अनुसार हिन्दू एक फ़ारसी शब्द है । हिन्दू धर्म को

[1] ."श्रीमद्भगवद् गीता ". मूलयह एक स्मृति ग्रन्थ है । इसमें एकेश्वरवाद की बहुत सुन्दर ढंग से चर्चा हुई है।

[2] . "श्रीमद्भगवद्गीता सातवाँ अध्याय"

[3] सनातनमेनमहुरुताद्या स्यात पुनर्णव् अधर्ववेद)10/8/23)

© 2023, SIJMR All Rights Reserved

सनातन धर्म या वैदिक सनातन वर्णाश्रम धर्म भी कहा जाता है। ऋग्वेद में सप्त सिन्धु का उल्लेख मिलता है - वो भूमि जहाँ आर्य सबसे पहले बसे थे । "भाषाविदों के अनुसार हिन्द आर्य भाषाओं की "स्" ध्वनि (संस्कृत का व्यंजन "स्") ईरानी भाषाओं की "ह्" ध्वनि में बदल जाती है । इसलिए सप्त सिन्धु अवेस्तन भाषा (पारसियों की धर्मभाषा) में जाकर हफ्त हिन्दु में परिवर्तित हो गया (अवेस्ता: वेन्दीदाद, फ़र्गर्द 1.18)" ।[4]

इसके बाद ईरानियों ने सिन्धु नदी के पूर्व में रहने वालों को हिन्दु नाम दिया । जब अरब से मुस्लिम हमलावर भारत में आए , तो उन्होंने भारत के मूल धर्मावलम्बियों को हिन्दू कहना शुरू कर दिया । चारों वेदों में, पुराणों में, महाभारत में, स्मृतियों में इस धर्म को हिन्दु धर्म नहीं कहा है , वैदिक सनातन वर्णाश्रम धर्म कहा है।

आर्यों की सभ्यता को वैदिक सभ्यता कहते हैं। पहले दृष्टिकोण के अनुसार लगभग 1700 ईसा पूर्व में आर्य अफ़ग़ा निस्तान, कश्मीर, पंजाब और हरियाणा में बस गए। तभी से वो लोग (उनके विद्वान ऋषि) अपने देवताओं को प्रसन्न करने के लिए वैदिक संस्कृत में मन्त्र रचने लगे। पहले चार वेद रचे गए , जिनमें ऋग्वेद प्रथम था। उसके बाद उपनिषद जैसे ग्रन्थ आए । हिन्दू मान्यता के अनुसार वे द, उपनिषद आदि ग्रन्थ अनादि , नित्य हैं, ईश्वर की कृपा से अलग- अलग मन्त्रद्रष्टा ऋषियों को अलग-अलग ग्रन्थों का ज्ञान प्राप्त हुआ जिन्होंने फिर उन्हें लिपिबद्ध किया। बौद्ध और धर्मों के अलग हो जाने के बाद वैदिक धर्म में काफ़ी परिवर्तन आया ।

नये देवता और नये दर्शन उभरे । इस तरह आधुनिक हिन्दू धर्म का जन्म हुआ दूसरे दृष्टिकोण के अनुसार हिन्दू धर्म का मूल कदाचित सिन्धु सरस्वती परम्परा (जिसका स्रोत मेहरगढ़ की 6500 ई.पू. संस्कृति में मिलता है) से भी पहले की भारतीय परम्परा में है। हालांकि भारत विरोधी वि द्वानों ने कई प्रयासों के बावजूद यहां तक कि भ्रामक प्रमाणो के आधार पर भी अपने विचार को सिद्ध नहीं कर पाए ।

प्राचीन काल में भारतीय सनातन धर्म में गाणपत्यए शैवदेवए कोटी वैष्णवए शाक्त और सौर नाम के पाँच सम्प्रदाय होते थे । गा णपत्य गणेशकीए वैष्णव विष्णु कीए शैवदेवए कोटी शिव कीए शाक्त शक्ति की और सौर सूर्य की पूजा आराधना किया करते थे । पर यह मान्यता थी कि सब एक ही सत्य की व्याख्या हैं । यह न केवल ऋग्वेद परन्तु रामायण और महाभारत जैसे लोकप्रिय ग्रन्थों में भी स्पष्ट रूप से कहा गया है। प्रत्येक सम्प्रदाय के समर्थक अपने देवता को दूसरे सम्प्रदायों के देवता से बड़ा समझते थे और इस कारण से उनमें वैमनस्य बना रहता था ।

एकता बनाए रखने के उद्देश्य से धर्मगुरुओं ने लोगों को यह शिक्षा देना आरम्भ किया कि सभी देवता समान हैंए विष्णु ए शिव और शक्ति आदि देवी .देवता परस्पर एक दूसरे के भी भक्त हैं । उनकी इन शिक्षाओं से तीनों सम्प्रदायों में मेल हुआ और सनातन धर्म की उत्पत्ति हुई । सनातन धर्म में विष्णुए शिव और शक्ति को समान माना गया और तीनों ही सम्प्रदाय के समर्थक इस धर्म को मानने लगे ।

सनातन धर्म का सारा साहित्य वेदए पुराणए श्रुतिए स्मृतियाँए उपनिषद्ए रामायणए महाभारतए गीता आदि संस्कृत भाषा में रचा गया है । कालान्तर में भारतवर्ष में मुसलमान शासन हो जाने के कारण देवभाषा संस्कृत का ह्रास हो गया तथा सनातन धर्म की अवनति होने लगी। इस स्थिति को सुधारने के लिये विद्वान संत तुलसीदास ने प्रचलित भाषा में धार्मिक साहित्य की रचना करके सनातन धर्म की रक्षा की । जब औपनिवेशिक ब्रिटिश शासन को ईसाईए मुस्लिम आदि धर्मों के मानने वालों का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिये जनगणना करने की आवश्यकता पड़ी तो सनातन शब्द से अपरिचित होने के कारण उन्होंने यहाँ के धर्म का नाम सनातन धर्म के स्थान पर हिंदू धर्म रख दिया ।

हिन्दुत्वके प्रमुख तत्त्व निम्नलिखित हैं-

मेरुतन्त्र ३३ प्रकरण के अनुसार 'हीनं दूषयति स हिन्दु' अर्थात जो हीन (हीनता या नीचता) को दूषित समझता है (उसका त्याग करता है) वह हिन्दु है ।

लोकमान्य तिलक के अनुसार-

असिन्धोः सिन्धुपर्यन्ता यस्य भारतभूमिका ।

[4] "एस धम्मो सनन्तनोधम्मपद) ", गाथा -5)

© 2023, SIJMR All Rights Reserved

पितृभूः पुण्यभूश्चैव स वै हिन्दुरिति स्मृतः।।[5]

अर्थात्- सिन्धु नदी के उद्गम- स्थान से लेकर सिन्धु (हिन्द महासागर) तक सम्पूर्ण भारत भूमि जिसकी पितृभू (अथवा मातृ भूमि) तथा पुण्यभू (पवित्र भूमि) है, (और उसका धर्म हिन्दुत्व है) वह हिन्दु कहलाता है।

" हिन्दु शब्द मूलतः फ़ारसी है इसका अर्थ उन भारतीयों से है जो भारतवर्ष के प्राचीन ग्रन्थों , वेदों, पुराणों में व र्णित भारतवर्ष की सीमा के मूल एवं पैदायसी प्राचीन निवासी हैं । कालिका पुराण , मेदनी कोष आदि के आधार पर वर्तमान हिन्दू -ला के मूलभूत आधारों के अनुसार वेदप्रतिपादित वर्णाश्रम रीति से वैदिक धर्म में विश्वास रखने वाला हिन्दू है "।[6] यद्यपि कुछ लोग कई संस्कृति के मिश्रित रूप को ही भारतीय संस्कृति मानते है , जबकि ऐसा नहीं है । जिस संस्कृति या धर्म की उत्पत्ती एवं विकास भारत भूमि पर नहीं हुआ है , वह धर्म या संस्कृति भारतीय (हिन्दू) कैसे हो सकती है।

हिन्दू धर्म के सिद्धान्त के कुछ मुख्य बिन्दु अधोलिखित है :

- परमब्रह्म एक नाम और रूप अनेक .
- परम तत्त्व ईश्वर सर्वत्र।
- जड़-चेतन में वास
- ईश्वर प्रेम और करुणा का संवाहक .
- हिन्दुत्व का अर्थ मोक्ष स्वर्ग और नरक से अलग .
- पैगम्बर विहीन धर्म।
- धर्म सत्य की रक्षा हेतु अवतार वाद की अवधारणा।
- परोपकार पुण्य है, दूसरों को कष्ट देना पाप है।
- जीवमात्र की सेवा ही परमात्मा की सेवा है।
- स्त्री देव तुल्य आदरणीय है।
- सती का अर्थ पति के प्रति सत्यनिष्ठा का प्रतीक पर समय पारिस्थि जानी भाव।
- मन ,संस्कार और परम्परा ही हिंदुत्व का मूल .
- प्रकृति और पर्यावरण को ईश्वर तुल्य मानना .
- हिन्दू दृष्टि समतावादी एवं समन्वयवादी.
- अविनासी आत्मा है।
- सबसे बड़ा मंत्र गायत्री मंत्र.
- हिन्दुओं का त्यौहार उत्सव धर्मिता से भरपूर।
- हिन्दुत्व पुरुषार्थ और माध्यम मार्ग ही श्रेष्ट।
- हिन्दुत्व एकत्व का दर्शन और मनोविज्ञान है।
- हिंदुत्व का अर्थ उत्सवधर्मिता है ,इसका अंत सुखान्तिका में होता है .

ज़्यादातर वैष्णव और शैव दर्शन पहले दो विचारों को सम्मिलित रूप से मानते हैं । जैसे, कृष्ण को परमेश्वर माना जाता है जिनके अधीन बाकी सभी देवी-देवता हैं और साथ ही साथ , सभी देवी- देवताओं को कृष्ण का ही रूप माना जाता है । तीसरे मत को धर्मग्रन्थ मान्यता नहीं देते।

जो भी सोच हो , ये देवता रंग- बिरंगी हिन्दू संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। "वैदिक काल के मुख्य देव थे-- इन्द्र, अग्नि, सोम, वरुण, रूद्र, विष्णु, प्रजापति, सविता (पुरुष देव) और देवियाँ-- सरस्वती, ऊषा, पृथ्वी, इत्यादि (कुल 33)। बाद के हिन्दू धर्म में नये देवी देवता आये (कई अवतार के रूप में)-- गणेश, राम, कृष्ण, हनुमान, कार्तिकेय, सूर्य-चन्द्र और ग्रह और देवियाँ (जिनको माता की उपाधि दी जाती है) जैसे-- दुर्गा, पार्वती, लक्ष्मी, शीतला, सीता, काली, इत्यादि"।[7]

ये सभी देवता पुराणों में उल्लिखित हैं और उनकी कुल संख्या 33 कोटी बतायी जाती है। पुराणों के अनुसार ब्रह्मा , विष्णु और शिव साधारण देव नहीं , बल्कि महादेव हैं और त्रिमूर्ति के सदस्य हैं । इन सबके अलावा हिन्दू धर्म में गाय को भी माता के रूप में पूजा जाता है । यह माना जाता है कि गाय में सम्पूर्ण 33 कोटि देवी देवता वास करते हैं । उल्लेखनीय है कि कोटि का यहाँ अर्थ प्रकार से है ना कि करोड़ (संख्या) से हैं । हिंदू धर्म मान्यताओं में पांच प्रमुख देवता पूजनीय है ये एक ईश्वर के ही अलग-अलग रूप और शक्तियाँ हैं।

---

[5] "एस धम्मो सनन्तनोधम्मपद) ", गाथा -5) अभिगमन तिथि 11 नवंबर 2013.

[6] *ThePrint (अंग्रेज़ी में (. अभिगमन तिथि 23 December 2020. Chadra Nath Basu's book Hindutva was published in 1892 by Gurudas Chatterjee. The first recorded use of the word Hindutva, at least in print, is believed to have been made in this book.*

[7] *अभिगमन तिथि 9 September 2019.*

© 2023, SIJMR All Rights Reserved

सूर्य - स्वास्थ्य, प्रतिष्ठा व सफलता ।
विष्णु - शांति व वैभव ।
शिव - ज्ञान व विद्या ।
शक्ति - शक्ति व सुरक्षा ।
गणेश - बुद्धि व विवेक ।

हिन्दू धर्म में कई देवता हैं , जिनको अंग्रेज़ी में ग़लत रूप से "Gods" कहा जाता है । “ये देवता कौन हैं, इस बारे में तीन मत हो सकते हैं : अद्वैत वेदान्त, भगवद गीता, वेद, उपनिषद्, आदि के मुताबिक सभी देवी-देवता एक ही परमेश्वर के विभिन्न रूप हैं (ईश्वर स्वयं ही ब्रह्म का रूप है) । निराकार परमेश्वर की भक्ति करने के लिये भक्त अपने मन में भगवान को किसी प्रिय रूप में देखता है । ऋग्वेद के अनुसार , "एकं सत विप्रा बहुधा वदन्ति", अर्थात एक ही परमसत्य को विद्वान कई नामों से बुलाते हैं ” ।[8] योग, न्याय, वैशेषिक, अधिकांश शैव और वैष्णव मतों के अनुसार देवगण वो परालौकिक शक्तियां हैं जो ईश्वर के अधीन हैं मगर मानवों के भीतर मन पर शासन करती हैं । योग दर्शन के अनुसार ईश्वर ही प्रजापति औत इन्द्र जैसे देवताओं और अंगीरा जैसे ऋषियों के पिता और गुरु हैं ।

“ मीमांसा के अनुसार सभी देवी- देवता स्वतन्त्र सत्ता रखते हैं और उनके ऊपर कोई एक ईश्वर नहीं है । इच्छित कर्म करने के लिये इनमें से एक या कई देवताओं को कर्मकाण्ड और पूजा द्वारा प्रसन्न करना ज़रूरी है । इस प्रकार का मत शुद्ध रूप से बहु- ईश्वरवादी कहा जा सकता है ” ।[9] हिन्दू राष्ट्रवाद (अंग्रेज़ी: Hindu nationalism) का सामूहिक रूप से सन्दर्भ , भारतीय उपमहाद्वीप की देशज आध्यात्मिक और सांस्कृ तिक परम्पराओं पर आधारित , सामाजिक और राजनीतिक अभिव्यक्तियों से हैं । कुछ अध्येताओं का यह वाद हैं कि हिन्दू राष्ट्रवाद एक सरलीकृत अनुवाद है , और इसका बेहतर वर्णन "हिन्दू जो देश के लिए समर्पित है " शब्द से होता हैं” ।[10] भारतीय मूल संस्कृति के प्रति जागरूकता और उसका विचार भारतीय इतिहास में अत्यधिक प्रासंगिक बन गया जब उसकी वजह से भारतीय राजनीति को एक विशिष्ट पहचान मिली तथा उपनिवेशवाद के विरुद्ध प्रश्न उठाने में आधार प्रदान किया । “मूल संस्कृति की भावना ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध स्वतंत्रता आंदोलनों को प्रेरित किया जिस में सशस्त्र संघर्ष , प्रतिरोधी राजनीति और गैर- हिंसक विरोध प्रदर्शन शामिल थे। इसने भारत में सामाजिक सुधार आंदोलनों और आर्थिक सोच को प्रभावित किया”[11]

“1923 में हिन्दू राष्ट्रवादी विनायक दामोदर सावरकर द्वारा लोकप्रिय की गई अवधारणा हिन्दुत्व , भारत में हिन्दू राष्ट्रवाद का मुख्य रूप है , प्राचीन हिंदू व्यवस्था में वर्ण व्यवस्था और जाति का विशेष महत्व था। चार प्रमुख वर्ण थे - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र । पहले यह व्यवस्था कर्म प्रधान थी। अगर कोई सेना में काम करता था तो वह क्षत्रिय हो जाता था चाहे उसका जन्म किसी भी जाति में हुआ हो। लेकिन मध्य का ल में वर्ण व्यवस्था का स्वरुप विदेशी आचार व्यवहार एवं - राज्य नियमों के तहत जाति व्यवस्था में बदल गया। विदेशी आक्रमणकारियों का शासन स्थापित होने से भारतीय जनमानस में भी उन्हीं प्रभाव हुआ। इन विदेशियों नें कुछ निर्बल भारतीयों को अपनी विस्ठा और लगाया तथा इन्हे मैला ढोने मे◌ं स्वरोजगार करने वाले लोगों चर्मकार), धोबी, डोम {बांस से दैनिक उपयोग की वस्तुओं के निर्माता} इत्यादि से जोड़ दिया। अंग्रेजो नें (इस व्यवस्था को और अधिक विकृत किया एवं जनजातियों को भी शामिल कर दिया ।[12] हिन्दू राष्ट्रवादी स्वयंसेवक संगठन राष्ट्री य स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) द्वारा हिन्दुत्व की हिमायत की जाती है , जिसे व्यापक रूप से सहबद्ध संगठन विश्व हिन्दू परिषद के साथ भाजपा के जनक संगठन के रूप में माना जाता है

[8] Oyebola, DD; Elegbe, RA (1975). "Cow's urine poisoning in Nigeria . Experimental observations in mice". *Trop Geogr Med*. **27** (2): 194–202

[9] 13 अगस्त 2009 को पुरालेखित. श्रीमद्भगवद् गीता हिन्दू धर्म के पवित्रतम ग्रन्थों में से एक है।

[10] दि गाड्स विदिन। मुंशीराम मनोहरलाल, नई दिल्ली, 2002.

[11] दैनिक जागरण .12 मार्च 2016. अभिगमन

[12] दैनिक जागरण .6 अप्रैल 2016. अभिगमन तिथि 6 अप्रैल 2016.

© 2023, SIJMR All Rights Reserved

। "सनातनी हिंदू भगवान विष्णु के १० अवतार मानते हैं:- मत्स्य, कूर्म, वराह, वामन, नरसिंह, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध और कल्कि हनुमान भी भगवान शिव के अवतार हैं । जिनमे पराशुराम और हनुमान को अमर माना जाता है ,यानि आज भी इस पृथ्वी पर ये अवतार जीवित है इस पृथ्वी की रक्षा हेतु माना जाता है"[13]

सन्दर्भ –सूची

1. "श्रीमद्भगवद् गीता". मूलयह एक स्मृति ग्रन्थ है । इसमें एकेश्वरवाद की बहुत सुन्दर ढंग से चर्चा हुई है।
2. "श्रीमद्भगवद्गीता सातवाँ अध्याय"
3. सनातनमेनमहुरुताद्या स्यात पुनण्रव् अधर्ववेद) 10/8/23)
4. एस धम्मो सनन्तनोधम्मपद) ", गाथा -5)
5. "एस धम्मो सनन्तनो धम्मपद) ", गाथा -5) अभिगमन तिथि 11 नवंबर 2013.
6. *ThePrint (अंग्रेज़ी में (. अभिगमन तिथि 23 December 2020. Chadra Nath Basu's book Hindutva was published in 1892*
7. *अभिगमन तिथि 9 September 2019.*
8. Oyebola, DD; Elegbe, RA (1975). "Cow's urine poisoning in Nigeria . Experimental observations in mice". *Trop Geogr Med*. **27** (2): 194–202
9. 13 अगस्त 2009 को पुरालेखित. श्रीमद्भगवद् गीता हिन्दू धर्म के पवित्रतम ग्रन्थों में से एक है।
10. दि गाड्स विदिन। मुंशीराम मनोहरलाल , नई दिल्ली, 2002.
11. दैनिक जागरण .12 मार्च 2016. अभिगमन
12. दैनिक जागरण .6 अप्रैल 2016. अभिगमन तिथि 6 अप्रैल 2016
13. 28 सितंबर 2009. स तया श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते। लभते च ततः कामान्मयैव विहितान्हि तान्॥7-22॥

!! इति श्री !!

[13] 28 सितंबर 2009. स तया श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते। लभते च ततः कामान्मयैव विहितान्हि तान्॥७॥२२ -

© 2023, SIJMR All Rights Reserved